न्यूज एंड व्यूज
News & Views

खंड 13 सं. 1 | अर्धवार्षिकी आर एण्ड डी न्यूज बुलेटिन [केरेउअवप्रसं-बहरमपुर] | जून, 2019

संपादकीय

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर देश के पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में रेशम उद्योग के विकास तथा इन क्षेत्रों में रेशम का सतत व सुस्थिर उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए निरंतर कार्यरत रहते हुए कृषकों से जुड़ी समस्याओं के निदान हेतु सर्वदा प्रयासरत है। संस्थान का ध्यान अधि-उपज वाली शहतूत प्रजातियों व थर्मो-सहनशील रेशम कीट संकरों, मृदा की उर्वरकता, खेती में मशीनीकरण को बढ़ावा देना तथा लागत-प्रभावी रेशम प्रौद्योगिकियों का उपयोग कर उन्नत शहतूत व कोसा उत्पादन पर मुख्य रूप से केन्द्रित है। अवधि के दौरान, शहतूत बीएलएस प्रतिरोध के लिए एसएसआर मार्कर्स (MM17 & NGS 26311) की पहचान की गई तथा C-2038 की तुलना में C-7 की पहचान, 5-10% अधि-जैवमात्रा व 61-72% उन्नत प्रतिरोधी के साथ उत्कृष्ट प्रजाति के तौर पर की गई। आठ अधि-उपज वाली शहतूत संततियों की पहचान, **V1** प्रजाति की अपेक्षा उच्च नाइट्रेट अपचायक गतिविधि (>2.78 किग्रा/पौध), बेहतर पर्ण गुणवत्ता एवं संवर्धन ट्रेट्स के तौर पर की गई। फर्टिगेशन प्रणाली के माध्यम से 75% आरडीएफ [उर्वरक की अनुशंसित मात्रा] का उपयोग कर नियंत्रण की अपेक्षा पर्ण उपज में ~30% ट/हे., जल उपयोग (~23%) तथा पोषक तत्व उपयोग करने की क्षमता में (~64%) की वृद्धि दर्ज की गई। शहतूत हेतु ग्रोइंग डिग्री डेज (जीडीडी) आधारित पर्ण उपज मौसम मॉडल का निर्धारण किया गया। निस्तरी की तुलना में पूर्वी क्षेत्र हेतु तीन उत्कृष्ट बहुप्रज एक्सेशनों (एक्सेशन सं. 80, 79 व 68) की पहचान की गई। 12Y x (BCon1.BCon4), एक नयी बहु x द्विप्रज संकर में N x (SK6.SK7) की अपेक्षा 20% अधि-कोसा उपज दर्ज की गई। जैव-नियंत्रण एजेंटों (स्किम्नस पल्लीडिकोली व क्राइसोपोरला ज़स्ट्रोवी) का सामूहिक गुणन कृषकों को आपूर्ति करने हेतु किया गया। पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी भारत में (16.78 लाख रोमुच; 48.54 किग्रा/100 रोमुच) सीपीपी क्लस्टरों के माध्यम से उल्लेखनीय मात्रा में अर्थात् 115.86 मैट्रिक टन द्विप्रज रेशम का उत्पादन किया गया। कृषकों को कुल 15678 मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए गए। सुवर्णा (संशोधित चरखा) तथा सौरो-नीर (सौर जल तापन प्रणाली) का विकास ईंधन एवं मानव दिवस की लागत कम करने हेतु किया गया।

एक कदम स्वच्छता की ओर

मुख्य संपादक: डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक

संपादक: डॉ. दीपेश पंडित, वैज्ञानिक-डी

सहायक संपादक: डॉ. मंजुनाथ जी. आर, वैज्ञानिक-सी

सहायक: श्री एस सरकार, त. स., श्रीमती एस. कर्मकार, त. स.
सुश्री टी. एन. टी. सिरीषा, आशु. लि. ग्रेड-II

हिंदी अनुवादः श्री आर. बी. चौधरी, सहायक निदेशक [राभा]
श्री चंदन कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक [हिंदी]

थ्रिप्स प्रबंधन हेतु जैव-नियंत्रण एजेंट

थ्रिप्स, शहतूत पौधरोपण को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाने वाले महत्वपूर्ण पीड़कों में से एक है। थ्रिप्स मुलायम पत्तियों के रस का अशन करने के साथ ही पत्ती के उदर भाग पर पीताभ ऊतकों को खुरच देती है जिसके कारण पत्तियों की पोषक तत्व में कमी आती है और परिणामतः पत्तियां रेशमकीट पालन के लिए अनुपयुक्त हो जाती है।

क्राइसोपोरला ज़स्ट्रोवी सिलेमी, जैव-नियंत्रण एजेंट, थ्रिप्स को सफलतापूर्वक नियंत्रित करती है तथा यह एकीकृत पीड़क प्रबंधन का एक अभिन्न घटक है। क्राइसोपोरला का संबंध क्राइसोपिडे (क्रम: इंसेक्टा) परिवार से है: और यह बहुत सारे कृषि फसलों में लगने वाले कीड़ों के लिए एक उपयोगी परभक्षी है। केरेउअवप्रसं, बहरमपुर द्वारा पूर्वी तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में थ्रिप्स प्रबंधन हेतु क्राइसोपोरला का उपयोग किया जा रहा है तथा संस्थान में बीसीए मास [MASS] उत्पादन प्रणाली को पहले ही संस्थापित किया जा चुका है।

वयस्क क्राइसोपोरला हरे रंग की, जालीनुमा पंखों वाली, मधुरस, पराग व अन्य शर्करा स्रोतों का अशन करने वाली एक परभक्षी है। एक वयस्क मादा लगभग 600 सवृत्त अंडे देती है, जो 3-4 दिनों में स्फुटित हो जाती है। लार्वा 8-10 दिनों के लिए थ्रिप्स पर अतोषणीय अशन करती है। तदुपरांत, कोसा तैयार कर कोशितीकरण की प्रक्रिया से गुजरती है। प्रभावी थ्रिप्स प्रबंधन (एक सप्ताह के अंतराल पर दो बार) हेतु लगभग 1000 अंडे / एकड़ की अनुशंसा की जाती है। अंडे, अंड-कार्ड के रूप में उपलब्ध हैं, जिन्हें पत्तियों के शीर्ष पर स्टेपल / बांधा जा सकता है।

क्या करें: थ्रिप्स का उत्पीड़न अत्याधिक होने पर छटांई के 21 दिन बाद रोगोर (3 मि.ली. / ली) का छिड़काव करें और फिर सुरक्षित अवधि (15 दिन) के समापन के पश्चात क्राइसोपोरला को पत्तियों पर छोड़ दें।

क्या न करें: क्राइसोपोरला को पत्तियों पर छोड़ने के पश्चात किसी भी कीटनाशक का छिड़काव न करें।

निदेशक का सिक्किम दौरा

डॉ. वी शिवप्रसाद, निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर 19-23 मई, 2019 के दौरान पहली बार सिक्किम के दौरा पर गए। जहाँ, उनका स्वागत रेशम निदेशालय के प्रतिनिधि श्री डी. आर. शर्मा, कंसल्टेंट-आईबीएसडीपी-सिक्किम द्वारा किया गया। वे, इस दौरान दक्षिण सिक्किम में कामरंग क्लस्टर के भी दौरे पर जाकर कृषक स्तर पर आईबीएसडीपी के अंतर्गत बसंत, 2019 के कीटपालन फसल, शहतूत बागानों एवं बुनियादी ढांचों के विकास का मुआयना करने के साथ ही लाभार्थियों के साथ सार्थक संवाद व विचार-विमर्श किए। इसके अलावे, रेशम निदेशालय-गंगतोक-सिक्किम के साथ बैठक कर सिक्किम में रेशम कृषि के उन्नयन हेतु भविष्य में अपनाए जाने वाली रणनीतियों पर विशद चर्चा की गई।

कार्यशाला की रिपोर्ट

केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, बहरमपुर [प.बं.] में दिनांक **17.06.2019** को **"राजभाषा कार्यान्वयन के विविध आयाम के अनुप्रयोग"** विषयक एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का प्रमुख ध्येय पदधारियों को राजभाषा हिंदी के प्रावधानों की सम्यक जानकारी देना तथा कार्यालयीन कार्यों में सम्मुखीन हो रहे समस्याओं का निदान करना था जिससे कि हिंदी के कार्यान्वयन में और भी गतिशीलता आने के साथ ही राजभाषा हिंदी के उत्तरोत्तर विकास हेतु अनुकूल माहौल की सृष्टि हो सके। इस अवसर पर संस्थान के कुल **18 पदधारियों** को राजभाषा के नियमों व अधिनियमों और उसके सम्यक कार्यान्वयन आदि की विस्तृत जानकारी तथा इसके अनुप्रयोग से अवगत कराया गया।

कार्यशाला के प्रारंभ में, संस्थान के सहायक निदेशक [राभा], श्री आर. बी. चौधरी ने राजभाषा हिंदी के लिए भारत सरकार द्वारा निर्धारित नियमों, उपबंधों व इसके प्रचार-प्रसार हेतु केन्द्र सरकार द्वारा समय-समय पर उठाए जा रहे नित-नए प्रयासों से सभी अधिकारियों को अवगत कराने के साथ ही साथ कार्यालय में हिंदी के अनुपालन संबंधी कठिनाईयों को दूर करने के सरल और सहज उपायों पर विशद रुप से प्रकाश डाला गया। इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिंदी से संबंधी अनुच्छेद 343 से 350 तक के अंतर्गत निहित नियमों तथा इसकी महत्ता व उपयोगिता पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई। इसके अलावे, उन्होंने राजभाषा प्रावधानों व नियमों अर्थात् धारा 3(3), राजभाषा नियम-5 व नियम-11 के संबंध मे विस्तृत जानकारी देने के अलावे उन्हें तिमाही प्रगति रिपोर्ट को भरने और संसदीय समिति की अपेक्षिताओं की पूर्ति से संबंधित जानकारी दी।

कार्याशाला के समापन समारोह के दौरान संस्थान के निदेशक महोदय, डॉ. वी. शिवप्रसाद द्वारा अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में उपस्थित सभी पदधारियों को संबोधित करते हुए यह कहा कि हिंदी कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य है हमारे दैनिक कार्य-कलापों को हिंदी में निष्पादित करने में आ रही कठिनाई को दूर करना तथा अधिकाधिक सरकारी काम-काज हिंदी में करना है ताकि हम हिंदी के लिए राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने तथा पदधारीगण अपना अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने के साथ ही संवैधानिक अपेक्षिताओं को भी पूरा करने में समर्थ हो सके। इसके अतिरिक्त, उन्होंने भविष्य में आयोजित होने वाले हिंदी कार्यशाला में पदधारियों को टिप्पण व आलेखन का अभ्यास करवाने पर बल दिए। तत्पश्चात, निदेशक महोदय द्वारा इस अवसर पर उपस्थित सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र भी प्रदान किया गया। सर्वशेष में श्री आर. बी. चौधरी, सहायक निदेशक [राभा] के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ इस कार्यक्रम की समाप्ति की घोषणा की गई।

मानव संशाधन विकास कार्यक्रम

संस्थान द्वारा जनवरी से जून, 2019 के दौरान **आठ** विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया:

दिनांक **02.01.2019** से **11.01.2019** तक, दस दिनों के लिए कृष्णनाथ महाविद्यालय के तेईस (23) छात्र-छात्राओं को शहतूत रेशम कृषि के विविध पहलुओं से अवगत कराया गया।

राष्ट्रीय रेशमकीट बीज संगठन के अधिकारियों के सहयोग से दो दिवसीय **21-22.01.2019 एवं 24-25.01.2019 को** रेशमकीट बीज के क्रियान्वयन पर दो बैच में केंद्रीय रेशमबीज समिति द्वारा अधिसूचित विभिन्न राज्य सरकारों तथा केंद्रीय रेशम बोर्ड के कुल चवालीस (44) अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया।|

नागालैंड के ग्रामीण क्षेत्रों के अठारह (18) रेशम कृषकों को दिनांक **04.02.2019** से **18.02.2019** तक शहतूत रेशम कृषि पर गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

दिनांक **21.02.2019** से **16.03.2019** तक सात (07) वैज्ञानिकों–बी/सी को शहतूत रेशम कृषि पर गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

केंद्रीय तसर अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, रांची के पन्द्रह (15) पीजीडीएस छात्र-छात्राओं को विस्तार दौरा के तहत तीन दिनों के लिए अर्थात् दिनांक **05.03.2019** से **07.03.2019** तक शहतूत रेशम कृषि पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

पश्चिम बंगाल के अठारह रेशम कृषक दस दिनों के लिए अर्थात् दिनांक **11.03.2019** से **20.03.2019** तक परिणत कीटपालन पर प्रशिक्षित किए गए।

रायगंज विश्व-विद्यालय के बीस (20) छात्र-छात्राओं को शहतूत रेशम कृषि पर पंद्रह दिनों के लिए अर्थात् दिनांक **27.05.2019** से **10.05.2019** तक गहन प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

केंद्रीय रेशम बोर्ड के अधिकारियों व पदधारियों हेतु दिनांक **11.06.2019** एवं **12.06.2019** को क्रमशः जेम व पीएफएमएस पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर बीस (20) अधिकारियों व पदधारियों को प्रशिक्षित किया गया।

रेशम कृषि मेला

केरेउअवप्रसं, बहरमपुर द्वारा 29 जनवरी 2019 को रविन्द्र सदन, बहरमपुर में रेशम कृषि मेला का आयोजन **श्री के. एम. हनुमंथरायप्पा, अध्यक्ष, केरेबो, बैंगलोर की अध्यक्षता** में किया गया। पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों (मुर्शिदाबाद, नदिया और बीरभूम) के रेशम कृषि के विभिन्न हितधारकों ने मेले में सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम में तकनीकी सत्र, प्रदर्शनी स्टाल, निदर्शन एवं हाल ही में विकसित प्रौद्योगिकियों पर कृषकों से संवाद व विचार-विमर्श के साथ ही इस अवसर पर, पश्चिम बंगाल के विभिन्न जिलों के तेरह सर्वश्रेष्ठ कृषकों को उनके पिछले वर्ष के दौरान कोसा उत्पादन में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने हेतु सम्मानित किया गया।

अविके, मोथाबाड़ी द्वारा 8 जनवरी, 2019 को रेशम कृषि मेला का आयोजन किया। मेले की अध्यक्षता श्री टी. आर. विश्वास, सभापति-मोथाबाड़ी द्वारा किया गया तथा श्री एस. मल्लिक, डब्ल्यू.बी.सी.एस. (एक्सक्यूटिव), संयुक्त बीडीओ-मोथाबाड़ी एवं श्री बी. दास, प्रभारी, मोथाबाड़ी-पुलिस स्टेशन सम्मानीय अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। मेले में 167 कृषकों ने भाग लिया तथा बीस सफल कृषकों को रेशम कृषि को बढ़ावा देने हेतु पुरस्कृत किया गया।

क्षेरेउअके, कलिम्पोंग द्वारा वर्शिप केंद्र, कलिम्पोंग में 21 जनवरी, 2019 को रेशम कृषि मेला का आयोजन किया। इस अवसर पर, परपोषी पौधे की कृषि एवं रेशम कीटपालन के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करने के साथ ही साथ शहतूत व मूगा की कोसोत्तर गतिविधियों पर भी एक प्रदर्शनी आयोजित की गई। मेले का प्रमुख उद्देश्य क्षेत्र में शहतूत कोसा के उत्पादन को बढ़ावा देने हेतु केंद्रीय रेशम बोर्ड द्वारा विकसित तकनीकी पहलुओं की जानकारी देने के साथ ही रेशम कृषकों के मध्य जागरूकता पैदा करना था। कार्यक्रम में क्षेत्र के 116 रेशम कृषकों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय कार्यक्रम

"सर्जिंग सिल्क" - वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रेशम कृषक लाभार्थियों (9 फरवरी, 2019) में "बुनियाद धागाकरण मशीनों" के संवितरण पर वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से केरेउअवप्रसं, बहरमपुर में एक व्यापक रेशम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त के मुख्य कार्यक्रम में माननीय वस्त्र मंत्री, श्रीमती स्मृति ईरानी एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति विज्ञान भवन, नई दिल्ली में उपस्थित थे।

बीरभूम जिले के बांधखला गाँव (प.बं.) में 15 फरवरी, 2019 को प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। डॉ. टी. डी. विश्वास एवं श्री डी. चक्रवर्ती (वैज्ञानिक-डी) बैठक में उपस्थित थे। उत्तरावस्था कीटपालन पैकेज पर विस्तृत चर्चा करते हुए बांस की बनी हुई कीटपालन ट्रे में अंतराल, निर्मोचन के समय देख-रेख, बिस्तर की नियमित साफ-सफाई एवं अनुकूल व आदर्श पर्यावरणीय परिस्थितियों के रख-रखाव के महत्व पर जोर दिया गया।

तुषेन बैपटिस्ट चर्च हॉल, तुषेन, उखरूल, इम्फाल में 23 फरवरी, 2019 को रेशम कृषि मेल-सह-प्रदर्शनी।

त्रिपुरा में बहु x द्विप्रज फसल की प्राप्ति

- ✓ त्रिपुरा में, N x (SK6.SK7) एवं M6DPC x (SK6.SK7) का कीटपालन पहली बार जुलाई के दौरान 95-96% सापेक्ष आर्द्रता तथा 300C-330C तापमान पर सफलतापूर्वक किया गया।
- ✓ 21 दिन की डिम्भकीय अवधि के साथ औसत कोसा उपज 35 किलोग्राम / 100 रोमुच दर्ज की गई।

सफल रेशम-कृषक की कहानी

श्रीमती भनीता चौधरी
ग्राम: हाल्धा, पोस्ट: हाल्धा
डारंग जिला, असम

आयु	34 वर्ष
पति	श्री रेबान चौधरी
परिवारिक सदस्यों की सं.	चार
शैक्षणिक आर्हता	एचएसएलसी
मोबाइल सं.	9101191802

श्रीमती भनीता चौधरी, अविके, मंगलदोई एवं असम राज्य के रेशम कृषि विभाग के मार्गदर्शन में अधि-उपज वाली शहतूत प्रजाति एस-1635 के साथ शहतूत की खेती वर्ष 2014-15 से ही कर रही हैं। वे, प्रति वर्ष लगभग 300 रोमुच अर्थात् प्रति फसल 100 रोमुच का कीटपालन करती है। उन्हें, रेशम कृषि से प्रति वर्ष लगभग रुपये 60,000 - 70,000 का आय होता है। साथ ही, उनकों एनईआरटीपीएस के अंतर्गत आईबीएसडीपी से 2015-16 के दौरान सहायता प्राप्त हुई। फलतः, रेशम कृषि से अर्जित आय से उनकी वित्तीय एवं सामाजिक स्थिति बहुत अधिक उन्नत होने के परिणामस्वरुप अब उन्होंने एक पक्के घर का निर्माण करा कर वहीं रेशम कीटपालन करती हैं। वे, उन्नत रेशम कृषि पद्धतियों को अपनाकर एक खुशहाल जीवन जी रही है। इसके द्वारा उन्हें बच्चों को अच्छी शिक्षा देने में भी मदद मिली है। उन्हें अविके, मंगलदोई, असम द्वारा आयोजित रेशम कृषि मेला (2017) के दौरान सर्वश्रेष्ठ रेशम कृषक के तौर पर सम्मानित किया गया।

वर्ष	फसल की सं.	कीटपालित रोमुच/ फसल की सं.	कुल कोसा प्राप्ति (किग्रा /सं.)	कुल आय (रु.)	शुद्ध आय (रु.)
2015-16	2	100	100	50,000.00	47,504.00
2016-17	3	100	144	72,000.00	68,256.00
2017-18	3	100	145	72,500.00	67,700.00

न्यूज व व्यूज के लिए आलेख

निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर शोध निष्कर्षों, टीओटी, प्रक्षेत्र जांच, निदर्शन, कृषक दिवस, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों से संबंधित अर्धवार्षिकी समाचार बुलेटिन का नियमित तौर पर प्रकाशन करते हैं। संस्थान तथा पूर्वी एवं उत्तर-पूर्वी राज्यों के क्षेरेउअके व अविके में कार्य करने वाले अधिकारियों व पदधारियों से अनुरोध किया जाता है कि वे प्रकाशन हेतु निदेशक, केरेउअवप्रसं, बहरमपुर, पश्चिम बंगाल को लेख भेजें। पत्र-व्यवहार ई-मेल द्वारा csrtiber.csb@nic.in /csrtiber@gmail.com भी किया जा सकता है

अतिथि व्याख्यान

- श्री सैबल घोष, वरिष्ठ प्रबंधक, एक्सिस बैंक, बहरमपुर: "उत्पाद का प्रस्तुतीकरण" (5 फरवरी, 2019)
- डॉ अनिंद्या घोष, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, सरकारी इंजीनियरिंग व वस्त्र महाविद्यालय, बहरमपुर: "वस्त्र उद्योग में अपगामी प्रतिपादन" (18 जून, 2019)
- डॉ. प्रदीप कुमार साहू, प्रोफेसर व कृषि व सांख्यिकी विभाग के प्रधान, विधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगालः "जीव विज्ञान में शोध पद्धति" (27 अप्रैल, 2019)

आर एंड डी समीक्षा बैठकें

- **49वीं आरएसी बैठक** अनुसंधान गतिविधियों के समीक्षार्थ आयोजित की गई। (15.01.2019)
- **9वीं आंचलिक बीवी-सीपीपी** समीक्षा समिति की बैठक 15 द्विप्रज क्लस्टरों की प्रगति के समीक्षार्थ आयोजित की गई। (16.01.2019)
- **विस्तार अधिकारियों की बैठक** का आयोजन क्षेरेउअके / अविके की विस्तार गतिविधियों की समीक्षा हेतु किया गया। (17.01.2019)
- **पूर्वी क्षेत्र के बीज विश्लेषकों एवं बीज अधिकारियों के लिए** बीज अधिनियम कार्यान्वयन पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम का आयोजन एनएसएसओ, बैंगलोर के समन्वय से किया गया। (21-22 व 24-25 जनवरी, 2019)
- **नई अनुसंधान परियोजनाओं** के समीक्षार्थ व इसे आरंभ करने हेतु अनुसंधान परिषद की विशेष बैठक आयोजित की गई। (18.03.2019)
- **50 वीं अनुसंधान परिषद की बैठक** का आयोजन अनुसंधान व विकास की प्रगति, नए अनुसंधान परियोजना प्रस्तावों की समीक्षा हेतु किया गया। (26.04.2019)
- **जैविक अनुसंधान में कृत्रिम इंटेलिजेंस के अनुप्रयोग पर विचार-मंथन सत्र (18 जून, 2019):** डॉ. सुरेश के., वैज्ञानिक-बी एवं डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक ने उपरोक्त विषय पर व्याख्यान दिए तथा संस्थान के सभी भाग लेने वाले वैज्ञानिकों से इस पर गहन विचार-विमर्श किया गया।
- नागालैंड में क्रियान्वित **एनईआरटीपीएस परियोजनाओं** की स्थिति के समीक्षार्थ आरएसटीआरएस-गुवाहाटी एवं रेशम निदेशालय, कोहिमा, नागालैंड (26.06.2019) के साथ सदस्य सचिव, केरेबो, बैंगलोर द्वारा आयोजित वीडियो कॉन्फ्रेंस में भाग लिया।

प्रकाशक: **डॉ. वी. शिवप्रसाद, निदेशक**
केन्द्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान
केन्द्रीय रेशम बोर्ड, वस्त्र मंत्रालय,
भारत सरकार, बहरमपुर-742101, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल, भारत
03482-224713, FAX: +91 3482 224714 EPBAX: 224716/ 17 / 18
csrtiber.csb@nic.in/ csrtiber@gmail.com ; www.csrtiber.res.in